राँची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत पीएच० डी० शोधोपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रारूप

पाणिनीय व्याकरण ग्रंथों में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर तत्कालीन सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन : एक अध्ययन

मानविकी संकाय के अन्तर्गत

शोध निर्देशिका

डॉ० हिमावती बिन्हा

सहायक-प्राध्यापक, संस्कृत विभाग

जगन्नाथ नगर महाविद्यालय

धुर्वा, राँची-4

शोधार्थी

दर्पना दे

संस्कृत विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

पाणिनीय व्याकरण ग्रंथों में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर तत्कालीन सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन : एक अध्ययन

1. प्रस्तावना :

संस्कृत का व्याकरण वैदिक काल में ही स्वतन्त्र विषय बन चुका था। नाम, आख्यात उपसर्ग और निपात - ये चार आधारभूत तथ्य यास्क (इ.पू. 700) के पूर्व ही व्याकरण में पा चुके थे। पाणिनि के पहले कई व्याकरण लिखे जा चुके थे जिनमें केवल अपिशालि और काशकृत्स्न के कुछ सूत्र आज उपलब्ध हैं, किन्तु संस्कृत व्याकरण का क्रमबद्ध इतिहास पाणिनि से आरंभ होता है। व्याकरण शास्त्र के नौ व्याकरण थे जिनके नाम कुछ इस प्रकार हैं –

“ऐद्रं चान्द्रं काशकृत्सनं कौमारं शाकटयनम्।

सारस्वतं चापिशलं शाकलं पाणिनीयकम्”।।

अर्थात् - एंद्र (इंद्र), चांद्र (चंद्र) काशकृत्सनम्, कौमार (कार्तिकेय), शाकटायन, सारस्वत (कृष्ण), आपिशलि, शाकल, पाणिनीय।

व्याकरण शास्त्र का वृहद् इतिहास है किन्तु महामुनि पाणिनि और उनके द्वारा प्रणीत अष्टाध्यायी ही इसका केन्द्र हैं। महर्षि पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी में चार पद हैं, लगभग 4000 सूत्र हैं।

पाणिनि ने अष्टाध्यायी में 3995 सूत्रों की रचना करके भाषा के नियमों को व्यवस्थित किया, जिसमें वाक्यों में पदों की रचना आदि प्रमुख तत्व हैं। इन नियम पालन के लिये धातु पाठ, गण पाठ तथा उणादि सूत्र भी पाणिनि ने बनाये। सूत्रों में उक्त, अनुक्त एवं दुरुक्त विषयों का विचार कर कात्यायन ने वार्तिक की रचना की।

बाद में महामुनि पतंजलि ने महाभाष्य की रचना कर संस्कृत व्याकरण को पूर्णता प्रदान की। इन्हीं तीनों आचार्यों को 'त्रिमुनि' के नाम से जाना जाता है। प्राचीन व्याकरण में इनका अनिवार्यतः अध्ययन किया जाता था। नव्य व्याकरण के अन्तर्गत प्रक्रिया क्रम के अनुसार शास्त्रों का अध्ययन किया जाता है जिसमें भट्टोजीदीक्षित, नागेश भट्ट आदि आचार्यों के ग्रन्थों का अध्ययन मुख्य है।

मुख्य पाणिनीय व्याकरण का सूत्र शब्द सूचियों में तत्कालीन सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनीतिक स्थितियों के बारे में समीक्षा करना इस इकाई के अध्ययन का प्रेरणा स्रोत है।

2. शोध का उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध के कतिपय उद्देश्य इस प्रकार है :-

i) इस शोध के द्वारा भारत के इतिहास निर्माण में सहायता प्रदान करना।

ii) पाणिनीय व्याकरण की विविध सूत्र, भाष्य सूचियों में प्राप्त तथ्य से सरलतापूर्वक ज्ञानलाभ।

iii) तत्कालीन समाज, रीतिनीति, संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

iv) तत्कालीन आर्थिक स्थिति, मुद्राओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करना।

3. शोध का महत्व और इसकी प्रासंगिकता :-

पाणिनीय व्याकरण अपने सूत्र, शब्द सूचियों के साथ, 5 वीं शताब्दी ईसा पूर्व भारत में जीवन और समाज के बारे में अमूल्य प्रासंगिक जानकारी प्रस्तुत करता है। यह हमें गाँवों शहरों, जनपद, संस्कृति, समाज व्यवस्था, आर्थिकस्थिति, जीविका, शिक्षा, धर्म के बारे में विविध विवरण प्रदान करता है।

पाणिनीय व्याकरण धर्म के आचरण के तरीके पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है। पाणिनीय व्याकरण ग्रन्थों में मदिरों, तीर्थस्थलों का उल्लेख है। यहाँ पर देवताओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए विग्रह का उपयोग किया जाता था।

तीर्थस्थलों के संरक्षक के कब्जे में विग्रह थी। ईसा पूर्व की टिप्पणी महाभाष्य में धनपति, राम, कृष्ण, शिव और विष्णु के मंदिरों का वर्णन किया गया है।

इस तरह से भारतीय समाज संस्कृति की पुरी जानकारी के लिए पाणिनीय व्याकरण ग्रन्थों में उपलब्ध सूत्र सामग्री की छानबीन करके शोध कार्य का आगे विस्तृत अध्ययन आवश्यक है।

4. शोध-कार्य से लाभ :-

* प्रस्तुत शोध कार्य से लाभ यह है कि अभी तक विद्यार्थी व्याकरण शास्त्र को केवल एक शब्दों के अनुशासन ग्रन्थों की तरह अध्ययन करते थे। अभी वे व्याकरण शास्त्रों को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखना या जानना शुरू करेंगे।

* तत्कालीन भावनाओं एवं विचारधारा कितनी समाजोपयोगी थी, यह भी जानना।

5. शोध प्रश्न :-

i. व्याकरण शास्त्र के अनुसार तत्कालीन समाज कैसा था ?

ii. तत्कालीन रीति-नीति - धर्म-दर्शन क्या था ?

iii. आधुनिक समाज और पाणिनीकालीन समाज के विचार-धाराओं में अन्तर क्या है?

6. शोध प्रविधि :-

i. प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लिए प्रयोजनानुसार सूत्र सूचियों की छानबीन करने के बाद व्याख्यात्मक और विवरणात्मक प्रविधियों का तथा प्रसंगानुसार तुलनात्मक विधि का प्रयोग करेंगे।

ii. प्रस्तुत शोध कार्य के लिए ग्रंथ अध्ययन के क्रम में पुस्तकालय से पुस्तकादि विधियों तथा अंतर्जाल का प्रयोग करेंगे।

7. प्रस्तावित अनुक्रमणिका

क) प्राक्कथन

ख) कृतज्ञताज्ञापन

ग) भूमिका

*** प्रथम अध्याय : (परिचय)**

क) पाणिनि व्याकरण का उद्भव एवं विकास

ख) अन्य वैयाकरण यथा त्रिमुनी आदि

*** द्वितीय अध्याय : (शिक्षा और साहित्य)**

क) पाणिनि की अष्टाध्यायी

ख) पाणिनि के टीकाकार

ग) अन्य समकालीन व्याकरण के रचयिता

घ) साहित्य-विज्ञान आदि पर इनका प्रभाव

*** तृतीय अध्याय : (पाणिनि कालीन सामाजिक समीक्षा)**

क) पाणिनि कालीन भौगोलिक स्थिति

ख) जनपद, ग्राम, नगर आदि

*** चतुर्थ अध्याय : (पाणिनि कालीन अर्थ व्यवस्था)**

क) कृषि, शिल्प, जीविका आदि

ख) मुद्राएँ, व्यवहार और ऋणदान आदि

*** पंचम अध्याय : (पाणिनि कालीन धर्म एवं राजनीति)**

क) धर्म – देववार, यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठान

ख) राज्य एवं राजनीति

ङ) दर्शन

*** उपसंहार**

* उपर्युक्त अध्यायों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन एवं परिवर्धन संभव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

i. संस्कृत व्याकरण-शास्त्र का इतिहास, मीमांसक युधिष्ठिर, रामलालकपूर द्रष्ट, बहालगढ़, सोनीपत, हरियाणा, 1984।

ii. व्याकरणशास्त्रेतिहासः, दाहाल लोकमणि, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, वाराणसी, यू० पी०, जवाहरनगर रोड, दिल्ली – 110007, संस्करण : 2007।

iii. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य उपाध्याय बलदेव, लखनऊ, प्रयाग।

शोध निर्देशिका

डॉ० हिमावती बिन्हा
सहायक-प्राध्यापक, संस्कृत विभाग
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय
धुर्वा, राँची-4

शोधार्थी

दर्पना दे
संस्कृत विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची